20

तूफ़ान को शान्त करना[1]

बाइबल पाठ #7

V. दूसरे से तीसरे फसह तक।
   क. यीशु ने सब्त के दिन एक लंगड़े को चंगा किया और अपने कार्य का बचाव किया (यूहन्ना 5:1-47)।
   ख. यीशु ने अपने चेलों का बचाव किया जिन्होंने सब्त के दिन अनाज तोड़ा था (मत्ती 12:1-8; मरकुस 2:23-28; लूका 6:1-5)।
   ग. यीशु ने सब्त के दिन एक सूखे हाथ वाले आदमी को चंगा करने का समर्थन किया (मत्ती 12:9-14; मरकुस 3:1-6; लूका 6:6-11)।
   घ. यीशु ने गलील सागर के पास बहुत से लोगों को चंगा किया (मत्ती 12:15-21; मरकुस 3:7-12)।
   ड. प्रार्थना के बाद, यीशु ने बारह प्रेरित चुने (मत्ती 10:2-4; मरकुस 3:13-19; लूका 6:12-16)।

परिचय

महान गलीली सेवकाई के दौरान यीशु की प्रसिद्धि बहुत बढ़ गई। लोगों की भीड़ उससे वचन सुनने और चंगाई पाने के लिए उसके पास आती थी। इस पाठ में जिस समय का वर्णन है, उसमें यीशु ने पहाड़ी उपदेश के लिए यादगारी मंच तैयार करते हुए अपने बारह प्रेरितों को चुना-जिसका अध्ययन हम अगले दो पाठों में करेंगे।

इस समय का शायद सबसे महत्वपूर्ण भाग यीशु के प्रति यहूदी अगुओं की बढ़ती घृणा ही थी। हर जगह यीशु पर आरोप लगाने का बहाना ढूंढ़ने के लिए जासूस उसके पीछे लगे रहते थे (मरकुस 3:2; मत्ती 12:10)। जब यीशु अपने शत्रुओं के जाल में नहीं फंसा, तो वे और भी क्रोधित हो गए (लूका 6:11)। मत्ती ने लिखा है कि "फरीसियों ने ... उसके विरोध में सम्मति की कि उसे किसी प्रकार नाश करें" (मत्ती 12:14; देखें मरकुस 3:6)। यूहन्ना ने लिखा है कि "यहूदी यीशु को सताने लगे," और यह कि वे "और भी अधिक उसको मार डालने का प्रयत्न करने लगे" (यूहन्ना 5:16, 18)।

सुसमाचार के वृत्तांतों के लेखकों ने यहूदी याजकतन्त्र की तर्क-विरुद्ध घृणा को क्यों लिखा? शायद वे यीशु के क्रूसारोहण में उनके योगदान को स्पष्ट करना चाहते थे। नये नियम के समय में रोमी क्रूस पर मरने से अधिक अपमानजनक बात कोई नहीं थी (इब्रानियों 6:6; देखें 12:2)। मैं नास्तिकों (उपहास के साथ) के यह कहने की कल्पना

कर सकता हूं, ''यदि यीशु सचमुच में वही था, जो होने का उसने दावा किया था, तो वह एक दण्ड पाए हुए अपराधी की तरह ज़्यों मरा?'' इस पाठ में ऐसे पद, जिनका हम अध्ययन करेंगे, इस प्रश्न का उज़र देने में सहायक होंगे।

पहले हम विवाद के तीन उदाहरणों को देखेंगे। फिर हम देखेंगे कि यीशु ने इसका सामना कैसे किया, और कुछ हद तक-विरोध के प्रभावों को भी देखेंगे।

बातों से अपमान का जवाब देना

इस पाठ का विरोध सज़्त के नियमों के इर्द-गिर्द घूमता है। सुसमाचार के वृज़ांत सज़्त के दिन छह विवादों के बारे में बताते हैं। इस पाठ में हम इनमें से तीन का ही अध्ययन करेंगे।

''सज़्त'' शज़्द का मूल अर्थ ''विश्राम'' है। संसार की रचना कर लेने के बाद परमेश्वर ने, सातवें दिन विश्राम किया था (उत्पज़ि 2:1-3)। बाद में सातवें दिन का विश्राम, जिसे सज़्त कहा जाता था, दस आज्ञाओं में दिया गया (निर्गमन 20:8-11)। सज़्त का दिन विश्राम का दिन था, जो परमेश्वर पर ध्यान लगाने और आनन्द करने के लिए होता था। यह सुनिश्चित करने के लिए कि सज़्त की पालना हो, परमेश्वर ने इसकी उल्लंघना करने वालों के लिए कठोर दण्ड ठहरा दिए थे (देखें गिनती 15:32-36; नहेमायाह 13:15-22; यिर्मयाह 17:19-27)।

परमेश्वर के नियम काफ़ी कठोर थे, परन्तु मनुष्य उन्हें वैसे ही नहीं रहने देना चाहते थे। एच.आई. हेस्टर ने लिखा है:

> इस दिन का मनाया जाना एक बड़ा जटिल और उबाऊ काम बन गया था। मूसा के प्रतिबन्धों को विस्तार देकर इतना अधिक बना दिया गया था कि उनकी संज़्या सैकड़ों में पहुंच चुकी थी। इनमें से कई नियम तो बड़े ही बेतुके थे। उदाहरण के लिए सज़्त के दिन नकली दांत लगाना, सफेद बाल निकालने या गेहूं की बाली तोड़ने, या वर्णमाला के अक्षर इकट्ठे लिखना भी बोझ उठाना ही माना जाता था।[2] इन बढ़ाए गए नियमों से सज़्त का दिन ... मनाना व्यावहारिक तौर पर असज़्भव हो चुका था। ... पूरे प्रबन्ध में सज़्त का अर्थ ही खो गया था।[3]

वारेन वियर्सबे ने इसका अवलोकन इस प्रकार से किया है, ''उन्होंने सज़्त अर्थात मनुष्य के लिए परमेश्वर के उपहार को लेकर इसे नियमों और प्रतिबन्धों के बन्दीगृह में बदल दिया था।''[4]

यीशु को घेरने के प्रयास में, यहूदियों के सज़्त के घिसे-पिटे जटिल नियम ''उनका पसन्दीदा कानून'' बन गए।[5] ज़्योंकि (व्यावहारिक तौर पर) कोई भी पूरी रीति से उनके सज़्त के नियमों को पूरा नहीं कर सकता था, इसलिए उन्हें लगा कि इसका उल्लंघन करने में यीशु को फंसाना कोई बड़ी बात नहीं होगी-और ऐसे उल्लंघन का दण्ड मृत्यु था (देखें गिनती 15:32-36)![6]

सब्त के दिन एक अधरंगी को चंगा करना (यूहन्ना 5:1-47)

हमारे पिछले पाठ के अन्त में, यीशु महान गलीली सेवकाई में व्यस्त था। इस पाठ के आरज़्भ में, यीशु एक धार्मिक पर्व के लिए यरूशलेम जाने से पहले विश्राम कर रहा था (यूहन्ना 5:1)। मूसा की व्यवस्था के अनुसार यहूदी पुरुषों के लिए, फसह, पिन्तेकुस्त और डेरों के पर्व जैसे बड़े पर्वों के लिए वर्ष में तीन बार यरूशलेम जाना आवश्यक था, और यीशु हमेशा व्यवस्था को पूरा करता था (मत्ती 5:17)। हम नहीं जानते कि यह पर्व कौन-सा था, परन्तु फसह के पर्व की अधिक सज़्भावना हो सकती है।[7] अपने अध्ययन के लिए, हम इसे फसह ही मानेंगे।

पिछले फसह के दौरान, यीशु ने धार्मिक कारोबारियों को मन्दिर से निकालकर यहूदी धार्मिक अधिकारियों का क्रोध भड़का दिया था। लेकिन इस फसह पर तो, उसने बैतसैदा कुण्ड में अड़तीस वर्ष के एक बीमार को चंगा करके उन्हें और क्रोधित कर दिया। यूहन्ना ने इस आश्चर्यकर्म को इन शज़्दों में लिखा है: ''यीशु ने उस से कहा, उठ अपनी खाट उठाकर चल फिर। वह मनुष्य तुरन्त चंगा हो गया, और अपनी खाट उठाकर चलने फिरने लगा'' (यूहन्ना 5:8, 9)। यूहन्ना ने फिर यह महत्वपूर्ण वाज़्य जोड़ा: ''वह *सब्त* का दिन था'' (आयत 10क)। रज़्बियों की परज़्परा के अनुसार, सब्त के दिन खाट पर किसी को ले जाना तो व्यवस्था के अनुसार था (उनके तर्क के अनुसार, खाट ''संयोग की बात'' थी), परन्तु खाट उठाकर जाना व्यवस्था के विरुद्ध था।

पहले तो यहूदी अगुओं ने बगल में खाट ले जाने वाले आदमी पर हमला किया; परन्तु जब उन्हें पता चला कि उसने अपना बिस्तर यीशु के कहने पर उठाया था, तो वे यीशु के पीछे पड़ गए। उनके हमला करने से यीशु का सबसे पहला सार्वजनिक संदेश दिया गया, जो लिखित रूप में है, कई लज़्बे प्रवचनों में से पहला,[8] जिसमें यीशु को अपना बचाव करना पड़ा था।

इस अवसर पर यीशु का मूल बचाव यह था कि सब्त के दिन यदि परमेश्वर ''काम'' कर सकता है, तो वह भी कर सकता है (आयत 17)। उसने ऐसे कामों के उदाहरण दिए, जिनमें वह और पिता सहयोगी थे (आयतें 19-30)। यीशु की अपने आप को परमेश्वर से मिलाने की बात से यहूदी भयभीत हो गए, ज़्योंकि वह ''अपने आप को परमेश्वर के तुल्य ठहराता'' था (आयत 18)! फिर मसीह ने यह सिद्ध करने के लिए कि वह वही था, जो होने का उसने दावा किया था, यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला, उसके आश्चर्यकर्म, पवित्र शास्त्र और विशेष तौर पर स्वयं परमेश्वर (आयतें 31-47) के एक के बाद एक साक्ष्य दिए। बर्टन कॉफ़मैन ने कहा है कि इस अवसर पर यीशु के शज़्द ''पवित्र लेख में सबसे गज़्भीर अर्थ वाले और निर्देशात्मक शज़्दों में से हैं।''[9]

स्पष्टतया, इस मुकाबले के थोड़ी देर बाद यीशु यरूशलेम से चला गया। कम से कम यरूशलेम की इस यात्रा के बारे में कुछ और नहीं लिखा गया है।

सब्त के दिन बालें तोड़ना (मत्ती 12:1-8; मरकुस 2:23-28; लूका 6:1-5)

गलील में लौट जाने के बाद,[10] एक सब्त के दिन मसीह अपने चेलों के साथ अनाज के खेत में से जा रहा था, ''और उस के चेलों को भूख लगी, सो वे बालें[11] तोड़-तोड़ कर खाने लगे'' (मत्ती 12:1)। लूका ने इसके साथ जोड़ा है कि चेले, ''[बालें] हाथों से मल मल कर खाते जाते थे'' (लूका 6:1)। गेहूं का दाना छिलके में ढंका होता है, जिसे खाने से पहले छिलका निकालना आवश्यक होता है। यीशु के अनुयायी उस छिलके या भूसी को उतारने के लिए दाने को अपने हाथों में रखकर मल रहे थे। फिर वे भूसी को फूंक मारकर उड़ाने के बाद गेहूं के कच्चे दानों को अपने हाथों में हिलाकर साफ कर के खा सकते थे।

जब वे बालें तोड़कर, हाथों से मलकर, फूंक मारकर गेहूं का दाना चबा रहे थे, तो सब्त के दिन उन पर बालें तोड़ने का आरोप लगाने के लिए अचानक कुछ फरीसी वहां आ धमके।[12] (इस दृश्य में हंसी वाली बात भी है: आडम्बरी फरीसियों को सुन्दर वस्त्र पहने, गेहूं के खेत में झुककर छिपे हुए अपनी प्रिय परम्पराओं की छोटी-छोटी बातों के लिए यीशु पर हमला करने की प्रतीक्षा करने की कल्पना करें!)

आरोप यह नहीं था कि वे किसी के खेत में चोरी कर रहे थे। व्यवस्था के अनुसार मुसाफिरों को बालें तोड़कर खाने की अनुमति थी (व्यवस्थाविवरण 23:25)। आरोप तो यह था कि उन्होंने परिश्रम करने के बारे में व्यवस्था के नियमों का उल्लंघन किया था। फरीसियों के अनुसार, कुछ बालें तोड़ना कटनी करने के बराबर था, अनाज की बालें हाथों से मलना अनाज पीटने की तरह ही था, फूंक मारकर छिलके उड़ाना हवा में भूसी उड़ाने की तरह और बालें खाना चक्की में पीसने की तरह था। (उन्होंने यह भी जोड़ लिया होगा कि चेलों ने ''खाना तैयार किया'' था, जिसकी सब्त के दिन मनाही थी।)

इस अवसर पर यीशु का बचाव यरूशलेम में प्रस्तुत किए गए बचाव से अलग था। अन्त में उसने कहा कि वे ''निर्दोष'' पर दोष लगा रहे हैं (मत्ती 12:7)। अन्य शब्दों में, यीशु ने ''दोषी न'' होने की बात की। ऐसा उसने पांच बातों को आधार बनाकर किया:

(1) ''दोषी नहीं''-क्योंकि अपनी भूख मिटाने के लिए तम्बू में पवित्र रोटी खाने पर दाऊद दोषी नहीं ठहरा था (मत्ती 12:3, 4; लूका 6:3, 4; देखें 1 शमूएल 21:6; लैव्यव्यवस्था 24:5-9)।[13]

(2) ''दोषी नहीं''-क्योंकि सब्त के दिन काम करने पर याजक भी दोषी नहीं ठहरते थे (मत्ती 12:5; देखें गिनती 28:9, 18, 19)। सब्त का दिन याजकों के लिए सप्ताह में सबसे अधिक व्यस्तता वाला दिन होता था।

(3) ''दोषी नहीं''-क्योंकि सब्त का दिन बोझ नहीं, बल्कि आशीष होने के लिए ठहराया गया था: ''सब्त का दिन मनुष्य के लिए बनाया गया है, न कि मनुष्य सब्त के दिन के लिए'' (मरकुस 2:27)। सब्त के दिन चेलों के पेट भरने से छोटी-सी चीज़ से मना करने के कारण उन पर व्यर्थ का बोझ पड़ गया।

(4) ''दोषी नहीं''-क्योंकि रीतियों (विशेषकर मनुष्य की बनाई रीतियों) से किसी का कष्ट दूर करना (जिसमें भूख भी शामिल है) का पालन करना आवश्यक था। यीशु ने

अपने ऊपर आरोप लगाने वालों को होशै 6:6 की बात याद दिलाई: ''मैं दया से प्रसन्न हूं,[14] बलिदान से नहीं'' (मत्ती 12:7)।

(5) ''दोषी नहीं''–ज़्योंकि मसीहा मनुष्य की बनाई परज़्पराओं के अधीन नहीं हो सकता। यीशु ने दो बातें कहीं, जिनसे फरीसी क्रोधित हो गए होंगे: ''पर मैं तुम से कहता हूं कि यहां वह है, जो मन्दिर से भी बड़ा[15] है'' (मत्ती 12:6); ''मनुष्य का पुत्र तो सब्त के दिन का भी प्रभु है'' (मत्ती 12:8; देखें मरकुस 2:28; लूका 6:5)। स्पष्टतया यीशु अपनी ही बात कर रहा था। उन्हें नहीं, बल्कि उसे ही यह निर्णय लेने का अधिकार था कि सब्त के सब्बन्ध में पुराने नियम की व्यवस्था के ढांचे में रहकर ज़्या किया जा सकता था और ज़्या नहीं।

फरीसी अवश्य अपने आप पर कुढ़ते हुए, क्रोध से लाल-पीले होकर चले गए होंगे।

सब्त के दिन सूखे हाथ वाले को चंगा करना
(मत्ती 12:9-14; मरकुस 3:1-6; लूका 6:6-11)

इसके कुछ दिन बाद,[16] ''एक और सब्त के दिन'' यीशु एक आराधनालय में गया, जहां उसे शिक्षा देने की अनुमति दी गई (लूका 6:6)। मत्ती के वृज़ांत के अनुसार, ''वह *उनकी* सभा के घर में आया'' (मत्ती 12:9), जो उन फरीसियों की बात है, जिन्होंने अनाज की बालों के कारण उस पर दोष लगाने की कोशिश की थी।

सभा में, ''एक मनुष्य (भी) था, जिस का हाथ सूखा हुआ था'' (मत्ती 12:10)। (ज़्या उसे मसीह को फंसाने के लिए उसके शत्रु लाए थे?)। फरीसियों ने कुछ देर तक देखा कि ''देखें, वह सब्त के दिन में उसे चंगा करता है कि नहीं''[17] (मरकुस 3:2)। अन्त में, जब उनके सब्र का बांध टूट गया तो उन्होंने शोर मचाते हुए मसीह के संदेश में बाधा डाल दी, ''कि ज़्या सब्त के दिन चंगा करना उचित है?'' (मत्ती 12:10)।

यीशु डरा नहीं। उसने सूखे हाथ वाले आदमी से कहा, ''बीच में खड़ा हो'' (मरकुस 3:3)। सभा के सामने खड़े उस आदमी के साथ, मसीह ने अपने प्रश्न पूछने वालों से कहा, ''सब्त के दिन ज़्या उचित है, भला करना या बुरा करना, प्राण को बचाना[18] या नाश करना?'' (लूका 6:9)। उसने एक आसान से उदाहरण का इस्तेमाल किया, जिससे सारा सब्बन्ध जोड़ा जा सकता है:

> उसने उनसे कहा; तुम में ऐसा कौन है, जिसकी एक ही भेड़ हो, और वह सब्त के दिन गड्ढे में गिर जाए, तो वह उसे पकड़कर न निकाले?[19] ज़ला मनुष्य का मूल्य भेड़ से कितना बढ़ कर है! इसलिए सब्त के दिन भलाई करना उचित है। तब उसने उस मनुष्य से कहा, अपना हाथ बढ़ा (मत्ती 12:11, 12)।

अपने शत्रुओं में करुणा की कमी से दुखी (मरकुस 3:5), यीशु ने उस आदमी से कहा, ''अपना हाथ बढ़ा!'' (मत्ती 12:13क)। ''उसने हाथ बढ़ाया और वह दूसरे हाथ की नाईं अच्छा हो गया'' (आयत 13ख)। यह एक आश्चर्यकर्म था, जिसे वहां उपस्थित

सब लोग देख सकते थे!

उसने शत्रुओं को (फिर से) चुप करा दिया था, परन्तु वे हार मानने को तैयार ही नहीं थे। उन्होंने ''बाहर जाकर उसके विरोध में सज़मति की कि उसे किस प्रकार नाश करें?'' (मज़ी 12:14)। मरकुस के वृज़ांत में यह अविश्वसनीय सा विवरण जोड़ा गया है: ''तब फरीसी बाहर जाकर तुरन्त हेरोदियों के साथ उसके विरोध में सज़मति करने लगे'' (मरकुस 3:6)। फरीसी हेरोदियों को *तुच्छ जानते थे,*[20] परन्तु उनका विश्वास था कि मसीह को चुप कराने के लिए उन्हें अपने राजनैतिक प्रभाव की आवश्यकता है। वे हेरोदियों से घृणा करते थे, परन्तु यीशु से उन्हें उनसे भी अधिक घृणा थी।

सज़त पर विवाद का यह भाग छोड़ने से पहले, मैं यह ज़ोर दूंगा कि यीशु ने कभी सज़त के लिए परमेश्वर का नियम नहीं तोड़ा, न ही उसने कभी किसी को ऐसा करने के लिए प्रोत्साहित किया। परन्तु कभी-कभी उसने मनुष्य की बनाई परज़्पराओं का उल्लंघन अवश्य किया, जो वर्षों से इसमें शामिल हो गई थीं, और इसी से उसके शत्रु क्रोधित हुए थे। अपने बाइबल पाठ में हम यीशु की सार्वजनिक सेवकाई के मध्य में भी नहीं पहुंचे हैं और उसके शत्रु दिन-रात उसे और उसके प्रभाव को खत्म करने का काम कर रहे हैं! जे. डज़्ल्यू. मैज़गर्वे ने लिखा है, ''इसके बाद यीशु के जीवन के विरुद्ध लहू की लाल रेखा सुसमाचार में दौड़ती है।''[21]

कार्यों से विरोध का जवाब देना

तीन सज़तों में अपने शत्रुओं से किए गए सामने के उज़र में, यीशु ने दो महत्वपूर्ण कदम उठाए।

अपने शत्रुओं से दूरी (मज़ी 12:13-21; मरकुस 3:7-12)

पहले, मसीह ने और झगड़े होने से बचने के लिए अपने आप को शत्रुओं से अलग कर लिया। मज़ी ने विवरण के बाद लिखा है कि फरीसियों ने ''उसके विरोध में सज़मति की, कि उसे किस प्रकार नाश करें'' (मज़ी 12:14), फिर यहां कहा गया है कि ''यह जानकर यीशु वहां से चला गया'' (मज़ी 12:15क)। तनाव कम करने के प्रयास में मसीह का यह पहली बार खिसकना था। बाद में और भी कई बार वह इसी प्रकार लोगों में से खिसक गया था।

''यीशु अपने चेलों के साथ झील [गलील की झील] की ओर चला गया'' (मरकुस 3:7क)। वहां भी, लोगों ने उसे ढूंढ़ लिया: ''और गलील से एक बड़ी भीड़ उसके पीछे हो ली। यहूदिया, और यरूशलेम और इदूमिया[22] से, और यरदन के पार, और सूर और सैदा के आसपास से एक बड़ी भीड़ ... उसके पास आई''[23] (मरकुस 3:7ख, 8)। यीशु लोगों को शिक्षा देता,[24] उनके बीमारों को चंगा करता और दुष्टात्माओं को निकालता था, परन्तु हर किसी से आग्रह करता था कि वह किसी को न बताए कि उसने ज़्या किया है (मज़ी 12:15, 16; देखें मरकुस 3:11, 12)। ज़्योंकि बेवजह की प्रसिद्धि से उसके शत्रुओं का

क्रोध बढ़ना ही था।

मत्ती ने ज़ोर दिया कि जो कुछ भी हुआ वह भविष्यवाणी का पूरा होना था (मत्ती 12:17-21; देखें यशायाह 42:1-4): नगर से यीशु का जाना और लोगों को चुप रहने के निर्देश से ये वचन पूरे हुए कि ''वह न झगड़ा करेगा, और न धूम मचाएगा और न बाज़ारों में कोई उसका शब्द सुनेगा'' (मत्ती 12:19)। रोगियों को उसके चंगा करने और ''कुचले हुए सरकंडे'' या बुझी हुई बत्ती जैसे लोगों के प्रति उसकी चिन्ता का पता चला (आयत 20)। पलिश्तीन से बाहर (इदूमिया, सूर और सैदा) से लोगों के आने से अन्यजातियों के लिए यीशु की सेवकाई के महत्व को समझने में बल मिला (मत्ती 12:18, 21)।

यीशु शिक्षा देता और चंगा करता रहा, परन्तु वह यहूदी अगुओं के साथ तुरन्त भिड़न्त से बचने का रास्ता भी निकाल रहा था।

अपने अनुयायियों में से चुनना (मत्ती 10:2-4; मरकुस 3:13-19; लूका 6:12-16)

यीशु ने बढ़ रहे विरोध पर प्रतिक्रिया अपने चले जाने के बाद इस काम को आगे बढ़ाने के लिए बारह लोगों को चुनकर की।[25] उसके दिन स्पष्टतया गिनती-मिनती के थे और यह आवश्यक था कि उसकी मृत्यु से पूर्व विशेष लोगों को प्रशिक्षित किया जाए। मरकुस ने बताया है कि इन्हें इसलिए चुना गया ''कि वे उसके साथ-साथ रहें, और वह उन्हें भेजे, कि प्रचार करें'' (मरकुस 3:14)। उन्होंने उसके साथ घूमना था और उसकी शिक्षा और उसके नमूने से सीखना था। उसने उन्हें विशेष मिशनों पर भी भेजना था, ताकि उन्हें अनुभव प्राप्त हो सके। इस प्रकार उन्हें ट्रेनिंग देकर प्रशिक्षित किया जाना था। इसी समय से, मसीह का अधिकतर प्रयास प्रेरितों को तैयार करने के लिए था।

बारह को चुनना परमेश्वर के परामर्श के बिना नहीं हुआ था। निर्णय लेने से पहले यीशु ''पहाड़ पर प्रार्थना करने को निकला,[26] और परमेश्वर से प्रार्थना करने में सारी रात बिताई'' (लूका 6:12)। हमारा हर निर्णय प्रार्थना के द्वारा लिया गया होना चाहिए।

यीशु ने अपने आस-पास काफ़ी पूर्णकालिक चेले इकट्ठे कर लिए थे।[27] प्रार्थना की रात के बाद उसने उन्हें ''बुलाकर उन में से बारह चुन लिए'' (लूका 6:13क)। उन चुने हुओं को उसने ''प्रेरित'' कहा (आयत 13ख; देखें मत्ती 10:2)। ''प्रेरित'' शब्द का अर्थ है ''भेजा हुआ।'' इस शब्द का इस्तेमाल किसी विशेष उद्देश्य के लिए भेजे गए के लिए सामान्य ढंग से किया जा सकता है, परन्तु स्वयं यीशु द्वारा दिए गए कमीशन के कारण इन प्रेरितों का मिशन या उद्देश्य और भी महत्वपूर्ण हो जाता है।[28]

सम्भवतया, *बारह* का चुना जाना महत्वपूर्ण है, क्योंकि यहूदियों के लिए ''बारह'' संख्या का विशेष अर्थ था; इब्रानी सोच के मुताबिक, इससे धार्मिक सम्पूर्णता का सुझाव मिलता था। उनके बारह पुरखे थे और इस्राएल के बारह गोत्र थे; अब यीशु ने बारह प्रेरितों को चुना था।[29]

मत्ती ने प्रेरितों की सूची कुछ इस प्रकार दी है:

> शमौन जिस का नाम उस ने पतरस रखा। और जब्दी का पुत्र याकूब और याकूब का भाई यूहन्ना, जिसका नाम उस ने बूअनरगिस, अर्थात गर्जन के पुत्र[30] रखा। और अन्द्रियास और फिलिप्पुस, और बरतुल्मै, और मत्ती, और थोमा, और हलफई का पुत्र याकूब, और तद्दै, और शमौन कनानी। और यहूदा इस्करियोती,[31] जिस ने उसे पकड़वा भी दिया (मरकुस 3:16-19)।[32]

लूका द्वारा दी सूची यह है:

> शमौन जिस का नाम उस ने पतरस भी रखा; और उसका भाई अन्द्रियास और याकूब और यूहन्ना और फिलिप्पुस और बरतुल्मै। और मत्ती और थोमा और हलफई का पुत्र याकूब और शमौन जो ज़ेलोतेस कहलाता है। और याकूब का बेटा यहूदा और यहूदा इस्करियोती, जो उसका पकड़वाने वाला बना (लूका 6:14-16)।

मत्ती ने अपनी सूची काफ़ी बाद में दी (जब यीशु ने बारह को एक प्रशिक्षण के मिशन पर भेजा)। परन्तु तुलना के लिए इस सूची को शामिल किया जाना आवश्यक है:

> बारह प्रेरितों के नाम ये हैं: पहिला शमौन, जो पतरस कहलाता है, और उसका भाई अन्द्रियास; जब्दी का पुत्र याकूब और उसका भाई यूहन्ना; फिलिप्पुस और बरतुल्मै, थोमा और महसूल लेने वाला मत्ती, हलफई का पुत्र याकूब और तद्दै। शमौन कनानी, और यहूदा इस्करियोती, जिसने उसे पकड़वा भी दिया (मत्ती 10:2-4)।

चौथी और अन्तिम सूची प्रेरितों के काम 1 अध्याय में, यहूदा की जगह दूसरे की नियुक्ति से पहले मिलती है: ''... पतरस और यूहन्ना और याकूब और अन्द्रियास और फिलिप्पुस और थोमा और बरतुल्मै और मत्ती और हलफई का पुत्र याकूब और शमौन ज़ेलोतेस और याकूब का पुत्र यहूदा'' (प्रेरितों 1:13)।

इन चारों सूचियों की तुलना करने का विशेष महत्व है। (''पवित्र शास्त्र में दी गई प्रेरितों की सूची'' वाला चार्ट देखें।) उदाहरण के लिए, ध्यान दें कि पतरस का नाम हर सूची में सबसे ऊपर है। इससे यह सिद्ध नहीं होता कि पतरस ''पहला पोप'' था, बल्कि इससे यह सुझाव मिलता है कि अपनी स्फूर्ति और विवेकपूर्ण क्षमता के कारण वह प्रेरितों में स्वाभाविक अगुआ बन गया। हम यह भी देखते हैं कि पहली तीन सूचियों में यहूदा का नाम अन्त में है। अपने बदनामी वाले कार्य से वह संदिग्ध व्यक्ति के रूप में अलग रखा गया था।

अन्य विवरणों पर ध्यान दिलाया जा सकता है। उदाहरण के लिए कई भाइयों के जोड़े हैं (और तद्दै को स्पष्टतया ''याकूब के पुत्र यहूदा'' के रूप में भी जाना जाता था)। शायद सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि हर सूची को चार के तीन जोड़ों में बांटा जा सकता है और

हर सूची में एक ही व्यक्ति सबसे ऊपर आता है: पतरस, पहले समूह में सबसे ऊपर है, फिलिप्पुस दूसरे समूह में, जबकि हलफई का पुत्र याकूब तीसरे समूह में सबसे ऊपर है। ज़्योंकि हर समूह में नामों के क्रम में कोई विशेष भिन्नता नहीं है, इसलिए इन तीनों नामों को एक ही जगह जान बूझकर रखा गया लगता है। पतरस, फिलिप्पुस और हलफई का पुत्र याकूब प्रशिक्षण के लिए तथा अन्य (विशेष कार्यों के) ''ग्रुप लीडर'' होंगे।

इन सूचियों को फिर से देखें। इनमें से कई लोगों का परिचय हमसे पिछले पाठ में करवाया गया है: पतरस और अन्द्रियास (यूहन्ना 1:40, 41; मत्ती 4:18), याकूब और यूहन्ना (मत्ती 4:21), फिलिप्पुस और शायद बरतुल्मै[33] (यूहन्ना 1:43, 45), और मत्ती (मत्ती 9:9)। नये नियम में दूसरे चेलों के बारे में बहुत कम बताया गया है, परन्तु उनके बारे में हम तीन मुज़्य बातें जानते हैं। पहली, उन सब को वैसे ही बुलाहट हुई होगी जैसे पतरस, अन्द्रियास, याकूब, यूहन्ना और मत्ती को हुई थी। दूसरी, पतरस और अन्यों की तरह उन्हें स्पष्टतया उनकी पिछली आत्मिक प्राप्तियों के कारण नहीं, बल्कि उनकी क्षमता के कारण चुना गया होगा। (यीशु ने उनकी कमियों और कमज़ोरियों को नहीं, बल्कि यह देखा कि वे ज़्या बन सकते हैं। परमेश्वर का धन्यवाद हो कि वह हमें ऐसे ही देखता है!) तीसरी, यीशु ने उन सब को शिक्षा देने और दुष्टात्माओं को निकालने की सामर्थ दी (देखें मत्ती 10:1)। इन विवरणों में, मैं एक और जोड़ देता हूं ''यहूदा इस्करियोती समेत।''

सारांश

बारह प्रेरितों के चयन से पहाड़ी उपदेश के लिए प्रेरणा मिली, जिसका अध्ययन हम अगले दो पाठों में करेंगे। परन्तु इस पाठ को समाप्त करने से पहले आइए कुछ अन्तिम अवलोकन करते हैं।

आलोचना होने के बावजूद यह सब यीशु को उसके मिशन से रोक नहीं पाया। उसने परमेश्वर के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए जो कुछ आवश्यक था, वह करना जारी रखा।

यदि आप सही काम करते हैं तो आपकी भी आलोचना होगी (जैसे हम अगले पाठ में देखेंगे [मत्ती 5:11])। जब आलोचना होती है, तो यह सुनिश्चित करने के लिए कि आप परमेश्वर की इच्छा पूरी कर रहे हैं, अपने आप को देख लें (1 पतरस 4:14-16)। यदि आप उसके घेरे में हैं, तो आलोचकों की बातों से हतोत्साहित होकर अपना काम छोड़कर न चले जाएं। इसके विपरीत, वफ़ादार रहने के लिए जो भी करना आवश्यक हो, करें।

टिप्पणियां

[1]आप इस पाठ की भूमिका भौतिक तूफ़ान को शान्त करने की एक तस्वीर वाले शब्द से दे सकते हैं।
[2]और बेतुकी परम्पराएं ये थीं: लोहे के कील वाला जूता सब्त के दिन नहीं पहना जा सकता था, ज़्योंकि वह

एक बोझ था; एक आदमी एक रोटी ले जा सकता था, परन्तु दो आदमी अपने बीच में रोटी नहीं ले जा सकते थे। [3]एच. आई. हेस्टर, *द हार्ट ऑफ़ द न्यू टैस्टामेंट* (लिबर्टी, मिज़ोरी: ज़्वालिटी प्रैस, 1963), 142. [4]वारेन डब्ल्यू वियर्सबे, *द बाइबल एज़्पोज़िशन कमैन्ट्री,* अंक 1 (व्हीटन, इलिनोइस: विक्टर बुक्स, 1989), 305. [5]ऐडम फाह्लिंग, *द लाइफ़ ऑफ़ क्राइस्ट* (सेंट लूईस, मिज़ोरी: कंकोर्डिया पब्लिशिंग हाउस, 1936), 195. [6]यद्यपि फरीसियों ने अपनी पूरी कोशिश की, परन्तु उन्हें यीशु द्वारा सब्त का उल्लंघन करने की कोशिश करने का पर्याप्त प्रमाण कभी नहीं मिला। पृथ्वी पर उसकी सेवकाई के अन्त में, उसने बहुत से मुकदमों में सब्त का उल्लंघन करने की बात कभी नहीं की। [7]विभिन्न सब्भावनाओं की चर्चा ए. टी. रॉबर्ट्सन, *ए हारमनी ऑफ़ द गॉस्पल्स फ़ॉर स्टूडेंट्स ऑफ़ द लाइफ़ ऑफ़ क्राइस्ट* (न्यूयॉर्क: हार्पर एण्ड रोअ, 1950), 267-70. [8]ऐसे छह उपदेश यूहन्ना की पुस्तक में लिखे मिलते हैं। इनमें से एक को छोड़कर सब बचाव यरूशलेम में हुए थे। [9]जेज़्स बर्टन कॉफ़मैन, *कमैन्ट्री ऑन जॉन* (ऑस्टिन, टैज़्सस: फर्म फ़ाउंडेशन पब्लिशिंग हाउस, 1974), 158. [10]हम मान लेते हैं कि यीशु के गलील में लौटने के कई कारण थे: अगली कहानी एक आराधनालय में घटी। मत्ती के अनुसार, इस आराधनालय में वे फरीसी लोग आते थे, जिन्होंने अनाज के खेत में यीशु का सामना किया था (मत्ती 12:2, 9)। मरकुस के अनुसार, यह आराधनालय समुद्र (अर्थात, गलील की झील) के निकट था (मरकुस 3:5-7)।

[11]यह बात फसह के तुरन्त बाद की बात है, बालें जौ की होंगी। [12]लूका के अनुसार, फरीसियों ने *चेलों* का विरोध किया। मत्ती और मरकुस के अनुसार, फरीसियों ने *यीशु* का विरोध किया। उन्होंने सब्भवतया दोनों का विरोध किया। [13]इनमें से कोई भी उदाहरण इस प्रमाण के लिए नहीं दिया जाना चाहिए कि हम सुरक्षा से परमेश्वर के नियमों को तोड़ सकते हैं। यीशु के कहने का अर्थ यह था कि यदि यहूदी अगुओं ने दाऊद को दोषी नहीं ठहराया, तो वे उसे और उसके अनुयायियों को ज़्यों दोषी ठहराते हैं। [14]NASB में होशै 6:6 में दया के बजाय ''वफ़ादारी'' परन्तु KJV में ''दया'' ही है। [15]यह यहूदियों के लिए एक स्पष्ट वाज़्य होगा, ज़्योंकि, उनकी नज़र में मन्दिर से बड़ा (अगर कोई था तो) केवल परमेश्वर ही था, जो उसमें वास करता था! [16]मत्ती के वृज़ांत में इसका संकेत मिलता है (मत्ती 12:9)। [17]उनकी इच्छा यहूदी सभा के सामने उस पर आरोप लगाने की थी, जो उसे मृत्यु दण्ड दे सकती थी। [18]उनके अपने नियमों में सातवें दिन डॉज़्टरों और अन्य लोगों को किसी का जीवन बचाने की अनुमति थी। (एल्फ्रेड एडरशेम, *द लाइफ़ एण्ड टाइज़्स ऑफ़ जीज़स द मसायाह,* न्यू अपडेटिड वर्ज़न [पीबॉडी, मैसाचुएट्स: हैंड्रिज़्सन पब्लिशर्स, 1993], 515)। [19]एक अन्य अवसर पर पशु के लिए बैल का इस्तेमाल करते हुए यीशु ने इसी उदाहरण का इस्तेमाल किया (लूका 14:5)। कुछ लोगों ने सभा में न जाने या निरन्तर परमेश्वर की अन्य आज्ञाओं को नज़रअन्दाज करने के बहाने के रूप में ''बैल को निकालने'' का रूपक इस्तेमाल किया है। एक बुज़ुर्ग प्रचारक ने किसी आदमी को बताया था, ''यदि तुज़्हारा बैल बार-बार कुएं में गिरता रहे, तो तुज़्हें चाहिए कि या तो उस बैल को बेच दो या कुएं को बन्द कर दो!'' [20]फरीसी उनसे इसलिए घृणा करते थे, ज़्योंकि वे हेरोदेस महान की मूर्तिपूजक/अन्यजाति परिवर्तनों का समर्थन करते थे।

[21]जे. डब्ल्यू. मैज़र्वे और फिलिप वाई. पैंडल्टन, *द फ़ोरफ़ोल्ड गॉस्पल ऑर ए हारमनी ऑफ़ द फ़ोर गॉस्पल्स* [सिंसिनटी: स्टैण्डर्ड पब्लिशिंग कं., 1914], 198)। [22]''इदूमिया'' शब्द ''एदोम देश'' के लिए है [''इदूमिया'' शब्द ''एदोम'' के लिए यूनानी शब्द से निकला है]। हेरोदेस महान इदूमी/एदोमी था। [23]इन स्थानों की स्थिति के लिए, ''इस पुस्तक में वर्णित मसीह की यात्राएं'' मानचित्र देखें। [24]एक बार फिर भीड़ ने यीशु पर दबाव डाला और आवश्यकता पड़ने पर पुलपिट (मंच) के रूप में इस्तेमाल करने के लिए पहले की तरह एक नाव तैयार की गई। हमें ऐसा कोई संकेत नहीं मिलता कि इस बार नाव का इस्तेमाल वास्तव में हुआ या नहीं। [25]यह शिष्यता (चेलेपन) का तीसरा चरण था-कुछ चुने हुओं के लिए एक विशेष चरण। [26]हम पक्का नहीं जानते कि यह पहाड़ कौन-सा था। यदि लूका 6 अध्याय का उपदेश मत्ती 5-7 वाले पहाड़ी उपदेश जैसा ही था तो सब्भवतया यह वही पहाड़ था, जहां पहाड़ी उपदेश दिया गया था (मत्ती 5:1; लूका 6:12, 17)। एक पहाड़ है, जो कफ़रनहूम से अधिक दूर नहीं है, उसे अब मुबारकबादियों (धन्य वचनों) का पहाड़ कहा जाता है, जहां से ये वचन लिए गए हो सकते हैं। एक और सब्भावना हज़ीन के सींग

के रूप में प्रसिद्ध पहाड़ है। [27]यह शिष्यता के लिए यीशु की बुलाहट का दूसरा चरण था। [28]यीशु को स्वयं एक प्रेरित कहा जाता था, ज्योंकि उसे परमेश्वर द्वारा भेजा गया था (इब्रानियों 3:1)। सामान्य अर्थ में ''प्रेरित'' शज्द के इस्तेमाल के अन्य उदाहरणों के लिए, देखें प्रेरितों 14:14; रोमियों 16:7; 2 कुरिन्थियों 8:23; फिलिप्पियों 2:25. (कई जगह इस यूनानी शज्द का अनुवाद ''दूत'' के रूप में किया गया है।) [29]बारह गोत्रों और बारह प्रेरितों के बीच सांकेतिक सज्बन्ध के लिए मज़ी 19:28 और लूका 22:30 देखें। [30]इस उपनाम के इस्तेमाल में सज्भवतया उपहास का स्पर्श होगा। यीशु ने सज्भवतया उन्हें उनके प्रचण्ड स्वभाव के कारण बुलाया (देखें लूका 9:51-56; मरकुस 9:38)। यीशु के प्रभाव के द्वारा यह स्वभाव सजकर सुधर गया था।

[31]''इस्करियोती'' का अर्थ सज्भवतया ''करिय्योत से'' है, जो संकेत देता है कि यहूदा उस नगर से था (पढ़ें यहोशू 15:25)। करिय्योत यहूदिया में था। स्पष्टतया यहूदा के अलावा बाकी सब चेले गलील से थे। [32]इन लोगों के और नाम दिए गए हैं। उदाहरण के लिए, थोमा को ''दिदुमुस'' (''जुड़वां'') भी कहा जाता है (यूहन्ना 11:16)। अपने अध्ययन पर पहुंचकर हम इनको देखेंगे। [33]कई लोगों का विचार है कि बरतुल्मै यूहन्ना 1:45-51 वाला नतनएल ही था।